स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

भारतीय डाक
India Post

डाक - एक्सप्रेस

संस्करण : जुलाई 2024

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश परिमंडल भोपाल - 462012

शुभकामना संदेश

विनीत माथुर
मुख्य पोस्टमास्टर जनरल,
मध्यप्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल – 462012

भोपाल, दिनांक 27 जून 2024

मुझे हर्ष है कि कार्यालय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश डाक परिमंडल द्वारा ई– पत्रिका डाक–एक्सप्रेस का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है। आशा है कि प्रकाशित रचनाएँ आपको रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेगी। यह एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य लेखन एवं पठन के प्रति कर्मचारियों में रुचि जागृत करना एवं उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करना भी है। मै अत्यंत प्रसन्न हूँ कि इस पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा व कला को सभी के सामने लाने का अवसर मिला है। आशा करता हूँ कि आगे आने वाले अंको में कार्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों को भी शामिल किया जाएगा।

मै इस पहल के लिए सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के उत्कर्ष्ट प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

विनीत माथुर

(विनीत माथुर)

शुभकामना संदेश

पवन कुमार डालमिया,
निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय)
मध्यप्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल

भोपाल, दिनांक 27 जून 2024

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि सभी के प्रयास से ई– पत्रिका डाक–एक्सप्रैस का प्रकाशन किया जा रहा है । पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार– प्रसार के अभियान का महत्वपूर्ण अंश है। पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा विविध विषयों पर अपनी रचनाएँ एवं चित्रकारी प्रस्तुत की है, जो प्रशंनीय है।

मै उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को हमारे सामने लाने में उल्लेखनीय कार्य करेगी इसी के साथ ही अन्य विषयों से संबंधित रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेख भी पत्रिका में शामिल किए जाएगे।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ी पूरी टीम को मै पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ एवं शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

डालमिया

(पवन कुमार डालमिया)

डाक-एक्सप्रेस

जुलाई 2024

मध्यप्रदेश डाक परिमंडल भोपाल

संयोजक : मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल- 462012

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री विनीत माथुर

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्यप्रदेश परिमंडल

भोपाल

मार्गदर्शक/संयोजक

श्री पवन कुमार डालमिया

निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय), मध्यप्रदेश परिमंडल

भोपाल

संपादन मंडल

श्री चंदेश कुमार जैन

सहायक पोस्टमास्टर जनरल (लीगल/भवन एवं राजभाषा)

मध्यप्रदेश परिमंडल, भोपाल

श्रीमती अर्चना वर्मा

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री संजय कुमार दुबे

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री महेश कुमार प्रियानी

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री सचिन कुमार यादव

सहायक लेखापाल

प्रधान अभिलेख कार्यालय एम. पी. मण्डल, भोपाल

अनुक्रमणिका

1 डाक कर्मयोगी

2 ध्रुवगति

3 मेरा डाकघर महान

4 देखो देखो डाकिया आया

5 हर पल हिसाब कर लेना

6 नद और नारी

7 ओस की बूंदे

8 एक आम औरत

9 ग्राफ आफ होप

10 सुकन्या समृद्धि खाता

11 राजभाषा एक परिचय

12 किव्ज

13 कलाकृति : सुकन्या समृद्धि खाता

14 कलाकृति : इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक

15 कलाकृति : चित्रकारी

16 कलाकृति : चित्रकारी

17 सम्मान

18 पत्र

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबधित लेखक के हैं । विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

अजय सिंह मीना
डाक सहायक, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

डाक कर्मयोगी

दूसरो की सेवा को सर्वश्रेष्ठ कहता है,
हर मुश्किल सफर में भी वह रास्ता ढूंढ लेता है।
अँधेरे रास्तों में मंज़िल बना लेता है,
होठों की मुस्कान से वो लोगों का दिल जीत लेता है।
अपनी हर परेशानी वो अकेले ही सहता है,
कठिन परेशानियों को पार करके वो लोगों के दुख कम करता है।
लोगों की उम्मीदों से ही वो आगे बढ़ता है,
हर दर्द से वो बेपरवाह रहता है।
उलझी एक पहेली सा खुद में सुलझा रहता है,
काम की कठिनाइयों को भी वो अपना कर्तव्य कहता है।
हर कोशिश से वो अंजानों को भी अपना बनाता है,
हर मुसीबत में वो सिर्फ मुस्कुराता है,
कुछ कहने पर नाम वो खुद का डाक कर्मयोगी बताता है।

राहुल कुमार बोपचे
डाक सहायक, परिक्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

ध्रुवगति

पृष्ठभूमि:

प्रस्तुत कविता की प्रेरणा विशाख दत्त द्वारा रचित रचना देवीचंद्रगुप्तम से ली गयी है। कविता में भारत के प्राचीन गुप्त वंश के शासक रामगुप्त, उसके छोटे भाई चंद्रगुप्त द्वितीय तथा नायिका व पटरानी ध्रुवस्वामिनी/ध्रुवदेवी के तत्कालीन दशा का वर्णन है। स्वरचित इस रचना को मैंने ध्रुवगति नाम दिया है तथा मेरे द्वारा कविता में रामगुप्त को राम तथा ध्रुवदेवी को ध्रुविता एवं ध्रुव नाम से संबोधित किया गया है।

अयोग्य गुप्त वंश शासक रामगुप्त, जिसने इर्ष्या वश अपने छोटे भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय की प्रेयशी ध्रुवस्वामिनी/ध्रुवदेवी से विवाह किया था, अब शकों के आक्रमण के डर से अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी/ध्रुवदेवी को उपहार स्वरूप शक सम्राट को देने की अपमानजनक संधि करता है । इस अपमान से बचने ध्रुवस्वामिनी/ध्रुवदेवी अपने पूर्व प्रेमी (अब देवर) को उलाहना देती है जिससे आहत होकर एवं अपने राष्ट्र का सम्मान बचाने हेतु, नायक चन्द्रगुप्त द्वितीय, ध्रुवस्वामिनी/ध्रुवदेवी का छद्मरूप बनाकर, शक सम्राट का वध करता है, साथ ही वापस आकर अपने अयोग्य भाई रामगुप्त को भी दंड देकर अपनी प्रेयशी ध्रुवस्वामिनी/ध्रुवदेवी का हाथ थामकर भारत का शासन संभालता है।

प्रस्तुत कविता में तय रात्रि से पहले, ध्रुवदेवी की मनोदशा से लेकर चन्द्रगुप्त द्वितीय के चुपके से डोली में जाने, शक सम्राट को मारने, उसके बाद रामगुप्त के भी वध तथा ध्रुवदेवी से विवाह का वर्णन है।

एंकाकी बैठी सोच रही, क्या दोष मेरा हे प्रभु कहो
थी विरह हुई प्रेम से तब, कर आया सौदा, अब पति अहो
होगा क्या कायर ऐसा भी, जो अपने प्राण बचाने को
दे दे बलि निज पत्नी की, रह जाने दे मर जाने को
है आन पड़ी, यह घडी विकट, मन में यह व्यथा समायी है
हे चन्द्रगुप्त अब चुप हो क्यों, क्या छाती भी पथराई है
कहने पे तुम्हारे दूर हुई, भाई को तुम्हारे वर डाला
कैसा है तुम्हारा भ्रातप्रेम, जो प्रेम को मेरे छल डाला
था ज्ञात तुम्हे है अयोग्य राम, न वीर बहुत, बस है कपटी
था सौंप दिया मुझको फिर भी, आंखे न तनिक तब थी झपकी
कहते थे तब है धर्म मेरा, आहूति ये देनी होगी
तब राज भी उसको सौंप दिया, एकमात्र यही करनी होगी
कहते थे यूं जो लड़ बैठूं, यह तनिक श्रेयस्कर न होगा
इक फूट वरन पड़ जाएगी, भारत भी प्रखर तब न होगा
लो दे बैठे अपना सब कुछ,क्या लाभ मिला अब ये तो कहो
बैठा है कायर गद्दी पर, मिट गयी मर्यादा भाग्य अहो
इक कायर जो कि भूल सब, है शकों से संधि कर आया
बस अपने प्राण बचाने को, सम्मान को गिरवी रख आया
सुन कटु वचन यूं ध्रुविता के, वह वीर बहुत पछताता है
क्या करना है, क्या कर बैठूं, न निर्णय अब कर पाता है
है क्षुब्द बहुत और व्याकुल भी, मन में यह रोष समाया है
क्यूं भाई मेरा, सम्मान का अपने, यूं सौदा कर आया है
ध्रुवती, अब जो गुप्त शान है, शत्रु को परोसी जाएगी
क्या सचमुच भारत के माथे, कल कालिख यह पुत जाएगी
सम्मान का रत्न गवांकर तब, क्या बात यूं ही बन जाएगी
तब गर्व बिना क्या प्रजा मेरी, फिर जीवन वो जी पायेगी
कर निश्चय मन में वीर पुत्र ने,निर्णय तब यह कर डाला
ना प्यार बड़ा, ना भ्रातप्रेम,बस जले गर्व की यह ज्वाला
करके वो अटल निर्णय मन में, सबका सम्मान बचाने को
ध्रुव रूप बना, बैठा डोली, शत्रु को धूल चटाने को
पहुंची डोली शत्रु गढ़ में, वह वीर बहुत हर्षाता है
कस हाथों से अपनी कृपाण, वह मंद मंद मुस्काता है
लो आ बैठा, क्षण भी वो अब, जब कालिख पुतने वाली थी
इक अबला निर्बल सी नारी, जब बेबस होनी वाली थी
जब आया शक सम्राट निकट, घूंघट ध्रुवती का उठाने को
तब नैन दिखे अंगारों से, न रहा ध्यान हर्षाने को
कर कृपाण का वार चपल, सर धरा पे गिरता जाता है
कर रक्षा तब भारत की यूं, वह पल खुद ही हर्षाता है
स्मरण हुआ इक शत्रु कम कर, यूं ही न समस्या हल होगी
वापस जाकर उसकी ध्रुवती, तब भी तो यूं निर्बल होगी
जो योग्य नहीं है शासन को, वह अधिकारी तो ना होगा
मेरा भारत फिर से यूं ही, निर्बल लाचार नहीं होगा
वापस जाकर अपनी नगरी, तब शासन अपने हाथ लिया
कायर को देकर दंड उचित, दामन ध्रुवती का थाम लिया
पाकर नव सम्राट वीर, जनता हर्षाई जाती है
सबका सम्मान बचाने को, नतमस्तक होती जाती है
गुप्तवंश के सिंहासन को, तब नायक बलवान मिला
भारत को मानो तब जाकर, वापस उसका सम्मान मिला

निर्भय सिंह
एमटीएस, परिक्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

मेरा डाकघर महान

मेरा डाकघर महान है,
बचत बैंक में टीडी, एमआईएस, एसबी, पीपीएफ, एसएसए का
खाता खुलवाना बहुत ही आसान है,
सीनियर सिटिज़न सेवा का भी योगदान है,
मेरा डाकघर महान है .....
कबूतरों से लेकर चिट्ठियों के सफर तक,
साधारण डाक, बुक पैकेट, पत्रिकाओं का भी रखाता यह ध्यान है,
मेरा डाकघर महान है .....
इनलेंड लेटर के साथ साथ बीएनपीएल, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड लैटर,
पार्सल का भी होता भारी काम है,
विदेशों तक डाक पहुंचाना इसकी शान है,
मेरा डाकघर महान है .....
मेघदूत से आर नेट, फेक्स और ई-मेल तक,
संचय पोस्ट से सीबीएस फिनेकल तक,
सीओडी का होता काम है,
मेरा डाकघर महान है .....

मेरा डाकघर महान है .....
पोस्ट ऑफिस के डाकिये को देखो,
लाया नए आयाम है,
डाक, बैंक, जमा, निकासी,
आधार, पैन, पासपोर्ट बाकी,
जीवन पत्र का भी प्रमाण है,
मेरा डाकघर महान है .....
सस्ता, सरल, सुगम, युक्तिबद्ध,
मजदूरों से लेकर पूंजीपति बिज़नेस धारी,
सभी की है इसमे हिस्सेदारी,
राष्ट्रहित ओर देशहित के विकास में,
करता यह सारे काम है,
मेरा डाकघर महान है .....

चारु जैन
डाक सहायक, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

देखो देखो डाकिया आया

खाकी वर्दी में जब वो आया,
कांधे पर झोला लटकाया।
देखो देखो डाकिया आया,
देखो डाकिया डाक है लाया।

दरवाजे पर जब वो आया,
अपने संग सन्देशा लाया।
हर खबर को घर–घर पहुंचाकर,
कागज के दुकड़े में हाल सुनाया।
सबने उसका आभार जताया,
देखो डाकिया डाक है लाया।

जी.डी.एस. है विभाग की शान,
पोस्टमैन की है अलग पहचान।
कोरोना काल में भी सेवारत रहकर,
देश के लिए किया सेवा का काम।

सच्चे योद्धा, जनसेवा में व्यस्त,
सर्दी–गर्मी–बरसात नहीं है बाधक।
कर्तव्य पथ पर अडिग रहते हैं,
दुर्गम राहों पर सेवा देते हैं।

डाक, दवा हो या हो मनीआर्डर,
हर इक काम में हैं ये अव्वल।
बैंक सेवाएँ जेब में रखता,
चलते–फिरते एटीएम हैं डाकिया ।

एक दिन बच्चे को था बुखार,
घर में पैसे की थी दरकार।
रविवार का दिन, चिंता का भार,
पोस्टमैन ने सुझाई फिर एक बात।

अंगूठा फिर मशीन पर लगवाया,
बैंक से पैसे निकाल कर लाया।
दुआ में दोनों हाथ उठाया,
धन्य विभाग, धन्य डाकिया कहलाया।

देखो देखो डाकिया आया,
देखो डाकिया डाक है लाया।

अक्षय ज्योतिषी
डाक सहायक, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

हर पल हिसाब कर लेना

रात के पहर में जब शोर खत्म हो जाए,
या दीये की चमक सूरज को ढक जाए,
जुगनू जब तपकर, एक सितारा बन जाए,
उस पहर में हर पल हिसाब कर लेना,
अपने दुख– सुख का खुद से इजहार कर लेना।

आंधियां जब तुझे चीर जाए,
और जब बदन का कपड़ा ही जकड़ता जाए,
जब धरती बंजर हो जाए,
और जब तुझे अपनी भूल का एहसास आए,
उस पहर में हर पल हिसाब करना,
अपने अंदर की आग को जरा ठंडा करना।

जब तेरी आंखों की चमक विस्मित हो जाए,
मानवता की बातें मिथ्या बन जाए,
अभिमान जब तेरा हिलोरें खाए,
जब तू अपनी ही मौत का ख्याल भूल जाए,
फिर तब अपने जीवन की सांसों का हिसाब करना,
अपने दुख–सुख का खुद से इजहार करना।

जब गले का हार फंदा बन जाए,
महानता की सारी हरकतें ओछी पड़ जाए,
जीवन का जल जब तेरा ठहर सा जाए,
खून की गर्मी जब तेरी ठंडी पड़ जाए,
तब उस पहर में हर पर हिसाब करना
वरना भविष्य में खुद को शर्मसार करना।

जब वाणी तेरी तेजाब बन जाए,
मीठा पानी जलकर शराब बन जाए,
हृदय तेरा जब तप कर चट्टान बन जाए,
या तू फिर हड्डी का कंकाल बन जाए,
उसके पहले ऐ अगोचर अपना हिसाब कर लेना,
अपनी गलतियों को खुद से स्वीकार कर लेना।

जब मिट्टी की गंध से ही दम घुट जाए,
चांद की शीतलता नीरस बन जाए,
मां की ममता जब अंधी पड़ जाए,
या पहाड़ सी उम्मीद भी ढीली पड़ जाए,
तब उस पहर में अपना हिसाब कर लेना,
अपनी हर मर्ज का ही खुद से इलाज कर लेना।

जब तेरा अंदर का आदमी शैतान बन जाए,
भविष्य तेरा भूतकाल निगल जाए,
सपने तेरे जीवन के जब कुचले से जाए,
जब तेरी आत्मा ही हिलोरे खाएं,
उस समय ठहरकर इंतजार कर लेना,
हर पल में उस पल का भी हिसाब कर लेना।

जब पराई आग से, अपना दामन जल जाए,
जब सुलगती चाहत फीकी सी पड़ जाए,
स्वप्न में जब तुझे शमशान की राह दिख जाए,
या बुरी बातों में तेरा मन भी रम जाए,
उस पहर कुछ इंतजाम कर लेना,
छुपी हुई इन बातों को खुद से दीदार कर लेना।
अपने दुख सुख का खुद से इजहार कर लेना,
अपनी हर मर्ज को खुद से इलाज कर लेना।।

कैलाश पति विश्वकर्मा
डाक सहायक, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

नद और नारी

वो शांत थी,
स्वच्छंद थी।
तुमने बांध दी।
तुम्हे लगा,
काबू पा लिया,
अपना बना लिया।
तुम अनजान कि वो अनजान?
तुम कौन हो?
कब आए हो?
तुम्हे लगने लगा,
तुम ही उसे लाए हो।
तुमने कहानियां गढ़ी,
बच्चों ने पढ़ी।
गर्व किया,
पुरखों ने क्या क्या ला दिया!
उसने बहुत कुछ खोया था,
खुद को संजोया था।
आदि से अनंत तक,
खुद रास्ता खोजा था।
वो ऊंचाई से गिरी,
अश्म पर पड़ी,
फिर खड़ी हुई,
और चल पड़ी।
सामने पहाड़ था,
उसका हौसला विशाल था।
वो अनवरत बही,
महीधर को भी चीर गई।
ठंडी रातें देखी,
तपती धूप भी।
फिर भी शीतल रही।
तमाम सभ्यताओं का बोझ उसने ढोया था।
इन सब से अनजान,
तू खुद में ही खोया था।
तुम रास्ते में मिले,
अपने कुछ ख्वाब सिले।
तुम्हे लगा तुमने उसे बांध दिया।
उसने इस बात को भी मान लिया।
वो शांत थी,
बहती हुई अनवरत,
फिर बारिश हुई, तूफान आया।
उसके मन में भी उफान आया।
अंधकार छाया,
भयंकर प्रवाह आया।
सारे बंधन छूट गए,
तुम्हारे भ्रम टूट गए।
अब पार कैसे जाओगे?
ये सपने भी टूट गए।
तुमने इंतजार किया,
बीते कल को याद किया।
तुमने फिर से उसे बांध दिया
फिर, एक बार भ्रम पाल लिया।

विनय श्रीवास्तव
अधीक्षक डाकघर, गुना संभाग, गुना

ओस की बूंदे

रात में आसमान से उतरलू,
अकुलाई सी शरमाई सी,
अपनी मंज़िल से अनजान,
ठंडी हवाओं संग गुनगुनातीं,
शांति और समपर्ण से भरीं,
थीं वो ओस की निर्मल बूदें,
धरती की गोद में आ गिरीं थीं।

किसी घास के तिनके पर,
किसी फूल की पत्ती पर,
या फिर सीधे मिट्टी पर,
चाह नही थी कोई,
ईश्वर की मर्जी में वो खोईं,
थीं वो ओस की निर्मल बूदें,
धरती की गोद में आ गिरीं थीं।

धरती ने उनका स्वागत किया,
जिससे भी उनका मिलन हुआ,
उनकी सुंदरता थी बढ़ाई,
जैसे कर दी हो सुंदर सी कढ़ाई,
मांग नही करना कोई आया,
बिना बोझ के साथ निभाया,
फिर भी पहचान नही खोई,
ध्यानमग्न सी बैठीं रहीं अपने सुख में खोईं,
थीं वो ओस की निर्मल बूदें,
धरती की गोद में आ गिरीं थीं।

फिर तपस्या का फल पाया,
सुनहरा सूरज नभ में उग आया,
उसकी आभा से हो गईं प्रकाशमान,
सूर्य उनमें से झिलमिलाया,
मोती सा उनको चमकाया,
बिन मांगे था बहुत कुछ पाया,
दिवाली सा उत्सव उन्होंने मनाया,
थीं वो ओस की निर्मल बूदें,
धरती की गोद में आ गिरीं थीं।

फिर जाने का वक़्त हो आया,
छोटा सा जीवन क्या खूब जी पाया,
धरती को था बहुत खूबसूरत बनाया,
सीख लें हम जीने की कला इनसे,
क्या खूब जीवन जीना सिखवाया,
लीन हो गईं अम्बर में फिर कहीं,
थीं वो ओस की निर्मल बूदें,
धरती की गोद में आ गिरीं थीं ।

शिल्पा अग्रवाल
डाक सहायक, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

एक आम औरत

वह बहुत सरल–सहज–निश्छल है,
खुश हुई–हंस दी,
दुख मिला–रो पड़ी,
गुस्सा आया–झगड़ ली,
प्यार आया–उड़ेल दिया।

वो है अपने घर–परिवार में रची बसी,
खाना बनाती, झाड़ती–बुहारती,
सीती–पिरोती, सवांरती–समेटती,
सबका ख्याल रखती, एक आम औरत।

वह कोमल है, पर जिम्मेदारियों के पर्वत भी उठाती है,
मान–मर्यादा, कायदे–नियम का विश्वास सर पर ओढ़ती है,
वह बहुत साहसी, बहुत सहनशील है,
समाज की धुरी पर घूमती, एक आम औरत।

वह गलतियाँ भी करती है, डांट भी खाती है,
वह डरती है, पर फिर हिम्मत भी दिखाती है,
वह जीवन की जननी है, जीवटता सिखाती है,
निरंतर रिश्तों में जीवन जीती,एक आम औरत।

वह सीता सी समर्पित, मंदोदरी सी धीर है,
वह पीटी उषा सी तेज, लक्ष्मीबाई सी वीर है,
वह लक्ष्मी–सरस्वती के रूप में सर्वाधिक पूजित है,
पर पारिवारिक–सामाजिक निर्णयों में सर्वाधिक उपेक्षित भी है,
सब की मिसाल है, एक आम औरत।

उससे ही रंग भरी होली है, भाई की राखी है,
दिवाली में दीयों और पकवानों से सजी थाली है,
दामन में खुशियाँ हज़ार और बगीचे में पसरी हरियाली है,
जिसका हर इरादा नेक और हर बात निराली है,
सबसे अद्वितीय है फिर भी सबके समान है, एक आम औरत।

Kailash Pati Vishwakarma
Postal Assistant, Circle Office, Bhopal

GRAPHS OF HOPE

The life of everyone in this world follows a pattern of trigonometric functions. Not completely but some parts of it, in some parts of life. And obviously not a single function but life keeps switching between these functions. If we exclude some exceptions and talk in general for most of the people in the world we come to know that lives of the most of the people on this Earth follow graph of sine or cosine. If we take time on x- axis and the value of life on y-axis, it will look like graph of sin(x) or cos(x). Here we have taken the 1 as the coefficient of x. It may get any real value like 2, 3, -1/2, -2/7 or whatever. So it will look like some follow sin(2x), some follow sin(x/2), or at some point of life, which means some are very fast in their life. Or at some point of life. Life gives them more than the others at the same time. We can take origin as birth. In case of cos(x), the value is 1 at 0. This situation is where people get so much hereditary. But most of the people follow the graph of sine. Everyone starts with 0 and reaches a high value. Time passes and value starts decreasing, attaining 0 even then minus 1. Again it goes up to 0 and then 1. Everyone can have their 0 and 1 and obviously are different from each other. It's very important to know where we are now. If we are at 1 just switch your graph from sine to tangent. If we are at 0 there is nothing to worry. We have half-half probability to reach 1 or to reach -1 each. If we know it is going to be 1. It's great. If we come to know that we are proceeding to minus 1 then there is a need to keep one thought in mind. That minus one is that point in the graph where there is 100% surety that we will raise our value. This thought will give us energy to keep the patience to wait for that time when life will start going up. So ultimately there is nothing absolute, we are just transiting ourselves from one state to another, or from one graph to another or from one value to another. And obviously everything is just relative. There is nothing like a constant absolute in life. Life has no single constant value for anyone. We all face highs and lows in our life. There is nothing permanent. We are not the same today that we were some years ago. And definitely we will not be the same after some years. So why should we worry about what is not permanent. Just go with what life gives us. Try always to reach high value and be prepared for low also and keep in mind. It is definite and sure 'har raat ke bad ek sabera hota hai' so keep PRAYATNAM.

कृष्णकुमार कलावत
प्रधान डाकघर– अशोकनगर
डाक संभाग– गुना (म.प्र.)

सुकन्या समृद्धि खाता

आओ भैया–भाभी आओ,
बिटिया का खाता खुलवाओ,
अल्पबचत का खाता एक,
"सुकन्या समृद्धि" सबसे नेक।

सुकन्या खाता सबसे खास
न्यूनतम राशि दो सौ पचास,
जगमग होते लाखों "दीप",
सबसे ज्यादा उत्तम ब्याज,
सदियों का भरोसा–प्यार अपार,
जन का सेवक अब आपके द्वार,
डाकघर में खाता खुलने को,
लागे नहीं कुछ–बस पैन–आधार।

नजदीकी डाकघर आयें,
"सुकन्या" का खाता खुलवाये,
सपनों को नये पंख लगायें,
सुखी–सफल समृद्ध बनायें।

राजभाषा एक परिचय

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है साथ ही संपूर्ण राष्ट्र की एकता एवं अखंडता की महत्वपूर्ण कड़ी होती है। महात्मा गांधी ने कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है। यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूंप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।

इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा हिंदी भाषा को 14 सितंबर, 1949 को संघ की राजभाषा के रूप मे अंगीकार किया गया। इसी अनुक्रम में 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार यह प्रावधान किया गया कि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी। साथ ही संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त अंकों के रूप में भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप अर्थात 1, 2, 3 आदि होगा।

अतः भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक कर्मचारी की यह संवैधानिक जिम्मेदारी है कि वे सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग कर राजभाषा कार्यान्वयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ।

इसी परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण राजभाषा नियमों एवं प्रावधानों के बारे में जानकारी दी जा रही है, जिनका पालन कर कार्यालय में राजभाषा नियमों के अनुरूप कामकाज किया जा सकता है। राजभाषा नियम 1976 के प्रावधानों के अनुरूप भारत सरकार द्वारा हिंदी बोले जाने एवं लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को भाषा के स्तर पर तीन क्षेत्रों में बांटा गया है।

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ शासित क्षेत्र
क	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान निकोबार द्वीप समूह ।
ख	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव, दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र ।
ग	क और ख क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या सभी संघ शासित क्षेत्र ।

राजभाषा अधिनियम 1963:

संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन मे गठित राजभाषा आयोग की अनुशंसाओं को ध्यान मे रखते हुए राष्ट्रपति महोदय द्वारा एक आदेश 1960 में जारी किया गया तथा संविधान के अनुच्छेद 343 (3) के प्रावधान के अनुसार राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया। इसमे कुल 9 धाराएं है। अधिनियम के अंतर्गत धारा 3(3) 26 जनवरी 1965 से लागू है।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले दस्तावेज:

1–राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत 14 दस्तावेज एक साथ द्विभाषी (हिन्दी व अंग्रेजी दोनों) रूप मे जारी करना अनिवार्य है। यह एक महत्वपूर्ण नियम है।

क्रमांक	मद का नाम हिंदी में	मद का नाम अंग्रेजी में	क्रमांक	मद का नाम हिंदी में	मद का नाम अंग्रेजी में
१	सामान्य आदेश	General orders	८	करार	Agreements
२	संकल्प	Resoluation	९	अनुज्ञप्तियां	License
३	परिपत्र	Circular	१०	निविदा प्रारूप	Tender Forms
४	नियम	Rules	११	अनुज्ञा पत्र	Permits
५	प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports	१२	निविदा सूचनाएं	Tender Notice
६	प्रेस विज्ञप्ति	Press release	१३	अधिसूचनाएं	Notifications
७	सविदाएँ	Contracts	१४	संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा दस्तावेज	Reports and documents to be laid before the Parliament.

उपर्युक्त के साथ– साथ निम्नलिखित बातों का भी ध्यान रखना जाए।

1. ऐसे सभी आदेश, निर्णय अथवा अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हो और जो स्थायी प्रकृति के हो।
2. ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन आदि(जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हो या उनके लिए हो)।
3. ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हो और अथवा सरकारी कर्मचारियों के लिए हो।

इसके अतिरिक्त संसद के एक सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले सरकारी दस्तावेज, प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट, अपने से उच्चतर कार्यालयो को भेजी जाने वाली प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट पूर्ण रूप से द्विभाषी रूप से प्रस्तुत की जाती है।

चूंकि संसदीय राजभाषा समिति इस मद को गंभीरता से लेती है और इसके अतिरिक्त विभिन्न आरटीआई पत्रों के माध्यम से राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के तहत जारी दस्तावेजों की जानकारी भी मांगी जाती है, अतः प्रत्येक कार्यालय अन्य के साथ–साथ इसका भी रिकार्ड रखें।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 5 :

राजभाषा नियम, 1976 के नियम–5 के अनुसार हिन्दी मे प्राप्त पत्रें के उत्तर हिन्दी में ही दिये जाएगें। इसका उल्लंघन किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिए।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 6 :

राजभाषा नियम 1976 के नियम 6 के अनुसार राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3)के अंतर्गत आने वाले 14 दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का उत्तरदायित्व है कि वे यह सुनिश्चित करें कि ये दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार एवं जारी किए गए है।

राजभाषा नियम 1976 का नियम –7 :

कोई स्टाफ /कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। हिन्दी में लिखे अथवा हिन्दी में हस्ताक्षरित अभ्यावेदन, आवेदन आदि के उत्तर हिन्दी में ही दिये जाएगें।

पवन कुमार डालमिया
निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय), मध्यप्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल

Quiz

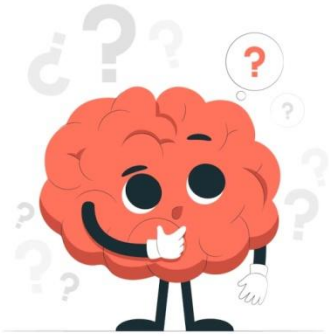

1. Which is the most common metal used in domestic appliances?
2. He was the fourth person, first Asian and first and only Indian so far who has been features as the 'Times Magazine Person of the Year' in 1930, Can you guess, who was he?
3. The Human being is referred to as Homo sapiens but which device is called Silico Sapiens?
4. The 'Buckingham Palace' , the official resident of the Queen Elizabeth – II is located in London then where you will find 'Buckingham Canal'?
5. Which country of the world shares its name with a bird?

Answers

1. Aluminium
2. Mahatma Gandhi
3. Computer
4. Between Andhra Pradesh and Tamil Nadu State of India
5. Turkey

रागिनी रावत, एबीपीएम
किलबानी बीओ, जगतपुर एसओ, गुना संभाग

कलाकृति
सुकन्या समृद्धि खाता

शैलेश पटेलिया, एबीपीएम
कुठियावाड़ बीओ, मायना एसओ, गुना संभाग

कलाकृति

इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक

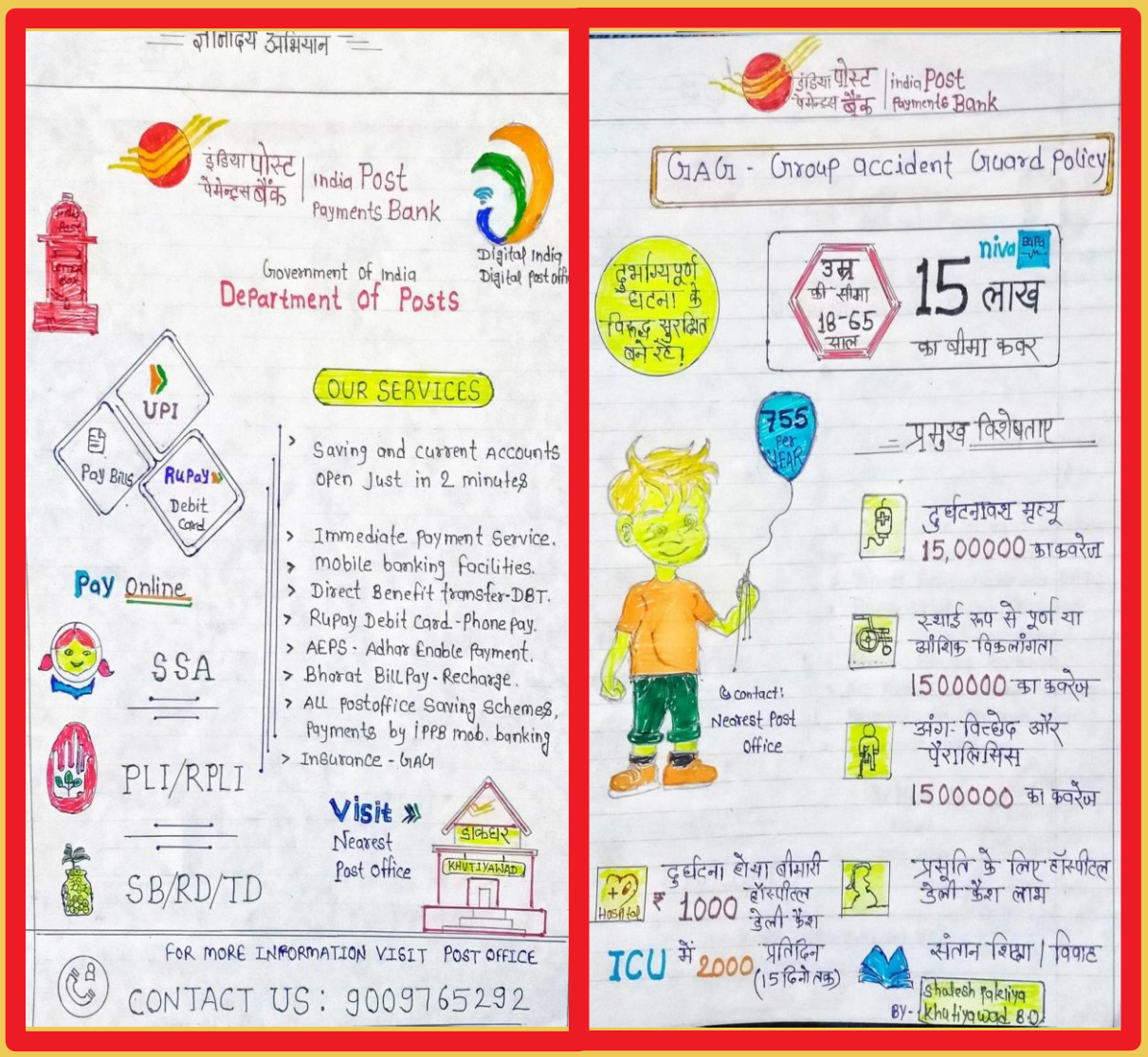

ओइशी चौरसिया पुत्री श्रीमती रोमिका चौरसिया
रोमिका चौरसिया, डाक सहायक
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

कलाकृति

शिवांगी गुप्ता
आशुलिपिक
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

कलाकृति

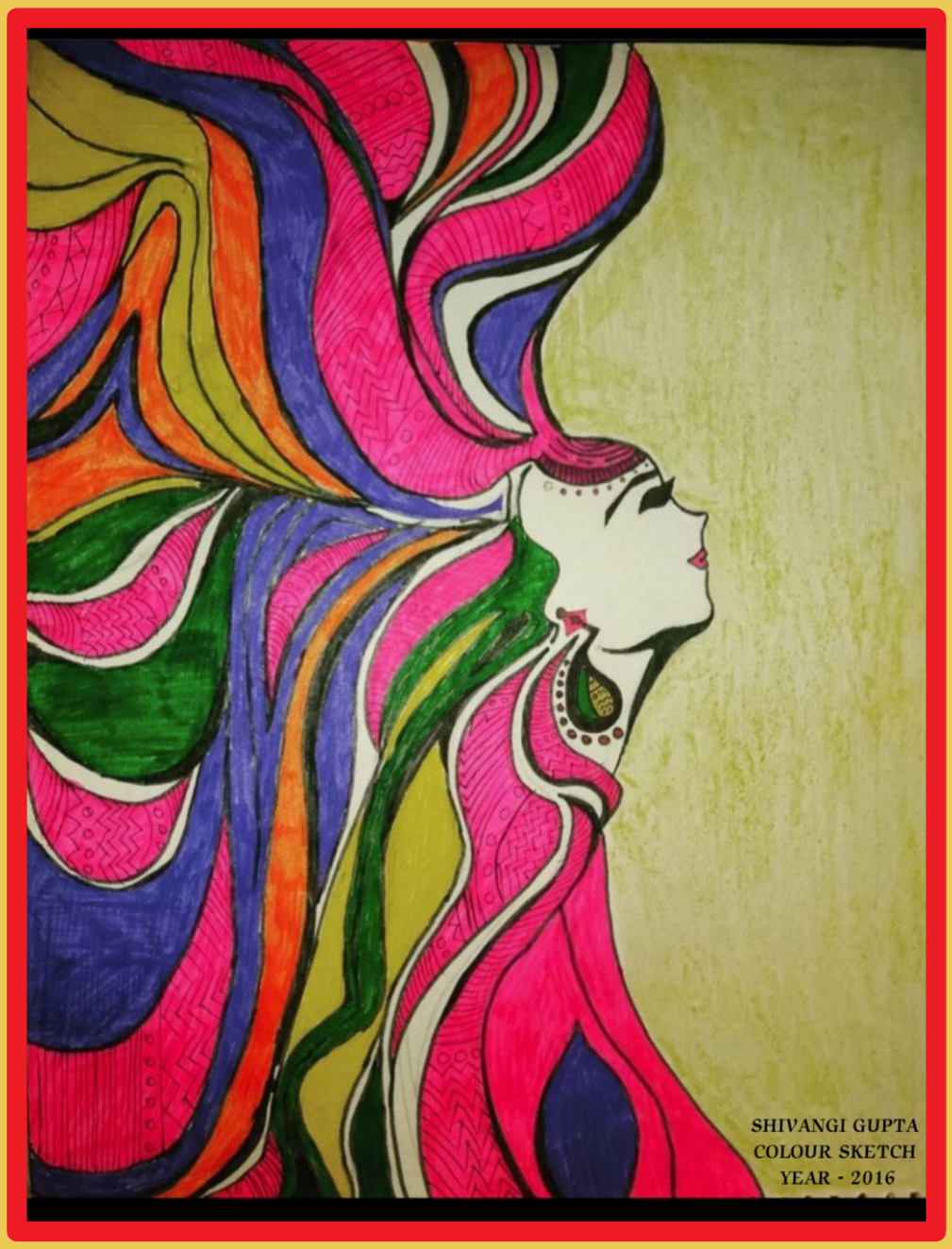

सम्मान

दिनांक 14.06.2024 को रात्रि में पार्सल हब में अचानक लगी आग के दौरान आरएमएस भोपाल के श्री योगेश कुशवाहा छटाई सहायक एवं उनकी टीम द्वारा अभूतपूर्व बुद्धिमत्ता एवं धैर्य के साथ कुशलता पूर्वक अग्निशमन यंत्र का उपयोग कर आग पर काबू पाया गया |

श्री योगेश कुशवाहा एवं टीम द्वारा किए गए उक्त सूझबूझ एवं साहस के कार्य हेतु माननीय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश परिमंडल एवं माननीय निदेशक डाक सेवायें (मुख्यालय) भोपाल द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया|

ओम शिवहरे
डाक सहायक, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

पत्र

भोपाल
मई 2024

मैं, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय, म॰ प्र॰ परिमंडल भोपाल हुं। मेरा इतिहास मध्य प्रदेश के इतिहास से जुड़ा हुआ हैं। भारत में डाक विभाग के अस्तित्व पर नजर डालें तो 1879 में मध्य भारत डाक परिमंडल अस्तित्व में आया।

प्रारंभ में डाक प्रशासन की दृष्टि से मध्य भारत और भोपाल राज्य राजस्थान डाक मंडल के अंतर्गत आते थे, जिसका मुख्यालय जयपुर था।

1 नवंबर, 1956 को नए मध्यप्रदेश राज्य के गठन के बाद मध्यप्रदेश डाक मंडल का कार्यालय नागपुर में स्थापित हुआ। तब भोपाल में मंडल मुख्यालय की खोज के पश्चात् श्री एल॰ के॰ नारायण स्वामी ने 16 जुलाई 1965 को मोती महल, भोपाल में मध्य प्रदेश डाक परिमंडल के पोस्टमास्टर जनरल के रूप में कार्यभार सम्हाला। और तब से लेकर आज तक मैं, मु॰ पो॰ मा॰ ज॰ कार्यालय प्रगति पथ पर अग्रसर हुं।

वर्ष 1980 में मध्य प्रदेश डाक परिमंडल कार्यालय अपने स्वयं के नवीन 7 मंजिला "डाक भवन" में स्थानान्तरित हुआ जो भोपाल की सात सुंदर पहाड़ियों में से एक 'अरेरा हिल्स' में स्थित हैं, जहां आज सभी अधिकारी-कर्मचारी कार्यरत हैं। ऐसे ऐतिहासिक और शानदार कार्यालय के सदस्य होने की आप सभी को शुभकामनाएं।

साभार:- म॰ प्र॰ डाक परिमंडल की वेबसाइट